प्रातः क्लास 15/12/68 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?
ओम शान्ति। ओम शान्ति अक्सर करके क्यों कहा जाता है? यह है परिचय देना। आत्मा का परिचय आत्मा ही देती है। बात–चीत आत्मा ही करती है शरीर द्वारा। आत्मा बिगर तो शरीर कुछ कर नहीं सकता। तो यह आत्मा, अपना परिचय देती है हम आत्मा परमपिता परमात्मा के सन्तान हैं। वह तो कह देते अहम् आत्मा सो परमात्मा। तुम बच्चों को यह सभी बातें समझाई जाती हैं। बाप तो बच्चे-2 ही कहेंगे ना। रूहानी बाप कहते हैं हे रूहानी बच्चों। इन ऑरगंस द्वारा तुम समझते हो। बाप समझाते हैं पहले-2 है ज्ञान, फिर है भक्ति। ऐसे नहीं कि पहले भक्ति, पीछे ज्ञान है। पहले ज्ञान दिन, पीछे है भक्ति रात। पहले ज्ञान, पीछे अज्ञान। बहुत करके सन्यासी लोग यह जानते होंगे ज्ञान दिन, फिर भक्ति रात। फिर पीछे कब दिन आवे जब भक्ति का वैराग्य हो। तुम्हारी बुद्धि में यह रहना चाहिए ज्ञान और विज्ञान है ना। पहले फिर भी ज्ञान कहना पड़े। अभी तुम ज्ञान की पढ़ाई पढ़ रहे हो फिर सतयुग-त्रेता में तुमको ज्ञान की प्रारब्ध मिलती है। ज्ञान बाबा अभी देते हैं जिसकी प्रारब्ध फिर सतयुग-त्रेता में होगी। यह समझने की बातें हैं ना। अभी बाप तुमको ज्ञान दे रहे हैं। तुम जानते हो फिर ज्ञान से परे विज्ञान अपने घर शांतिधाम में जावेंगे। उनको न ज्ञान, न भक्ति कहेंगे। उसको कहा जाता है विज्ञान। ज्ञान से परे शान्तिधाम चले जाते हैं। यह सभी ज्ञान बुद्धि में रखना है। बाप ज्ञान देते हैं। नई दुनिया में जावेंगे तो पहले अपने घर ज़रूर जावेंगे। मुक्तिधाम में जाना है, जहाँ के रहवासी आत्माएँ हैं वहाँ तो ज़रूर जावेंगे ना। यह नई-2 बातें तुम ही सुनते हो। और कोई समझ नहीं सकते। तुम समझते हो हम आत्माएँ स्प्रीचुअल फादर के स्प्रीचुअल बच्चे हैं। रूहानी बच्चों को ज़रूर रूहानी बाप चाहिए। रूहानी बाप और रूहानी बच्चे। रूहानी बच्चों का रूहानी बाप एक ही है। वह आकर नॉलेज देते हैं। बाप कैसे आते हैं वह भी समझाया है। बाप कहते हैं मुझे भी प्रकृति धारण करना पड़े। अभी तुमको बाप से सुनना ही सुनना है। सिवाय (बाप) के और कोई से नहीं। बच्चे सुनकर फिर और भाइयों को सुनाते हैं। कुछ न कुछ सुनाते ज़रूर हैं, अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो; क्योंकि वही पतित-पावन है। बुद्धि वहाँ चली जाती है। बच्चों को समझाने से समझ जाते हैं; क्योंकि पहले बेसमझ थे। भक्तिमार्ग में बेसमझाई से रावण के चम्बे में आने से क्या-2 करते हैं। कैसे छी-2 बन जाते हैं। शराब पीने से क्या बन जाते हैं! शराब गन्दगी को और ही बढ़ाती है। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में है बेहद के बाप से हमको वर्सा लेना है, कल्प-2 लेते आए हैं। इसलिए दैवी-गुण भी ज़रूर धारण करनी है। कृष्ण की दैवीगुणों की कितनी महिमा है। वैकुण्ठ का मालिक कितना मीठा है। अब कृष्ण की डिनायस्टी नहीं कहेंगे। अभी तुम बच्चों को मालूम है बाप ही राजाई की डिनायस्टी देते हैं। यह चित्र आदि भल न भी हों तो भी तुम समझा सकते हो। मंदिर तो बहुत बनते रहते हैं। जिनमें ज्ञान है वह औरों का भी कल्याण करने आप समान बनाने भागते रहेंगे। अपन को देखना है हमने कितने को ज्ञान सुनाया है। कोई-2 को झट ज्ञान का तीर लग जाता है। भीष्मपितामह आदि ने भी कहा है ना हमको कुमारियों से ज्ञान बाण लगा। यह सभी पवित्र कुमार-कुमारियाँ हैं अर्थात बच्चे हैं। तुम सभी बच्चे हो। इसलिए कहते हो हम ब्रह्मा के बच्चे कुमार-कुमारियाँ भाई-बहन हैं। यह पवित्र नाता होता है। सो भी एडॉप्टेड चिल्ड्रेन्स हैं, बाप ने एडाप्ट किया है। शिवबाबा ने एडॉप्ट किया है प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा। वास्तव में एडॉप्ट अक्षर भी नहीं कहेंगे। शिवबाबा के बच्चे तो हैं ही। सभी मुझे बुलाते हैं ओ शिवबाबा! परन्तु वह समझ कुछ नहीं है। सभी आत्माएँ शरीर धारण कर पार्ट बजाती हैं। तो शिवबाबा भी ज़रूर शरीर धारण कर पार्ट बजावेंगे ना। शिवबाबा पार्ट न बजावे तो फिर कोई काम का न रहा। वैल्यु ही न होती। उनकी वैल्यु ही तब है जबकि सारी दुनिया की सद्गति करते हैं। तब उनकी महिमा होती है। भक्तिमार्ग में गाते हैं। सद्गति हो जाती है फिर पीछे तो बाप को याद करने की दरकार ही नहीं। वह सिर्फ गॉड फादर कहते हैं तो फिर टीचर, गुरु गुम हो जाता। कहने मात्र रह जाता है कि परमपिता परमात्मा पावन बन.... वाला है। वह सद्गति करने वाला भी नहीं कह सकते। भल गायन में आता है सर्व की सद्गति दाता एक;

परन्तु अर्थ बिगर कह देते हैं। अभी तुम जो कुछ कहते हो सो अर्थ सहित। समझते हो भक्ति रात अलग है, ज्ञान दिन अलग है। अभी दिन का भी टाइम होता है, रात का भी टाइम होता है। यह बेहद की बात है। तुम बच्चों को नॉलेज मिलती है बेहद की। आधा कल्प है दिन, आधा कल्प है रात। बाप कहते हैं मैं भी आता हूँ रात को दिन बनाने। बेहद का बाप कहते हैं मैं आता हूँ बेहद की रात में। आधा कल्प दिन पूरा हुआ। दिन और रात के बीच में आता हूँ। तुम जानते हो आधा कल्प है रावण का राज्य। उसमें अनेक प्रकार के दुख हैं। फिर बाप नई दुनिया स्थापन करते हैं तो उसमें सुख ही सुख मिलता है। कहा जाता है यह सुख और दुख का खेल है। सुख मना राम, दुख माना रावण। रावण पर जीत पाते हो तो रामराज्य होता है। फिर आधा कल्प बाद रावण राम-राज्य पर जीत पाती है तो खुद रावण बैठ राज्य करता है। तुम अभी माया पर जीत पाते हो। अक्षर व अक्षर तुम अर्थ सहित कहते हो। यह है तुम्हारी ईश्वरीय भाषा। यह कोई समझेगा थोड़े ही ईश्वर कैसे बात करते हैं। तुम जानते हो यह गॉड फादर की भाषा है; क्योंकि गॉड फादर नॉलेजफुल है। गाया भी जाता है वह ज्ञान का सागर नॉलेज-फुल है। तो ज़रूर किसको तो नॉलेज देंगे ना। अभी तुम समझते हो कैसे बाबा नॉलेज देते हैं। अपनी भी पहचान देते हैं और सृष्टि-चक्र का भी नॉलेज देते हैं जो नॉलेज लेने से हम चक्रवर्ती राजा बनते हैं। स्वदर्शनचक्र है ना। याद करने से हमारे पाप कट जाते हैं। यह है तुम्हारा अहिंसक चक्र याद का। वह चक्र है हिंसक सिर काटने का। वह अज्ञानी मनुष्य एक/दो का सिर काटते रहते हैं। तुम इस स्वदर्शनचक्र को जानने से बादशाही पाते हो। वह गला काटते हैं। वह है हिंसा का चक्र जिससे गला कटता है। काम महाशत्रु है जिससे आदि-मध्य-अन्त दुख मिलता है। वह है दुख का चक्र। तुमको बाप बैठ यह चक्र का नॉलेज समझाते हैं। स्वदर्शनचक्रधारी बना देते हैं। शास्त्रों में तो कितनी कथाएँ आदि बना दी हैं। ढेर के ढेर कथाएँ हैं। तुमको अभी वह सभी भूलना पड़ता है। सिर्फ एक बाप को याद करना है; क्योंकि बाप से ही स्वर्ग का वर्सा लेंगे ना। बाप को याद करना है और वर्सा लेना है। कितना सहज है। बेहद का बाप नई दुनिया स्थापन करते हैं तो वर्सा लेने लिए ही याद करते हो। बाप ही दैवी स्वराज्य अथवा स्वर्ग स्थापन करते हैं। तो बाप को और वर्से को याद करना है। मन्मनाभव, मद्याजीभव। बाप और वर्से को याद करते क्यों नहीं बच्चों को खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए। हम बेहद के बाप के बच्चे हैं। हम स्वर्ग के मालिक थे। भारतवासियों की ही बात है। तुम कहते हो हम बेहद के बाप के बच्चे हैं। बाप स्वर्ग की स्थापना करते हैं, हम स्वर्ग के मालिक थे, फिर ज़रूर हमको ही मालिक होना चाहिए। हम आत्माएँ बाप के बच्चे हैं, बाप स्वर्ग स्थापन करते हैं तो हमें भी ज़रूर स्वर्ग के मालिक होने चाहिए। बाप से वर्सा पाने वाले स्वर्गवासी ज़रूर होते हैं। फिर तुम ही नर्कवासी हुए हो। स्वर्गवासी भी तुम्हीं बनते हो। जो सतोप्रधान बनते हैं वही फिर तमोप्रधान भी ज़रूर बनते हैं। सतोप्रधान थे, अभी तमोप्रधान हैं। भक्तिमार्ग में भी हम ही आए हैं, ऑलराउण्ड चक्र लगाया है। हम ही भारतवासी स्वर्गवासी थे अर्थात सूर्यवंशी थे, फिर चंद्रवंशी, वैश्य वंशी..... बन नीचे गिर हैं। हमारा कुल था। हम भारतवासी देवी-देवताएँ थे। फिर हम ही गिरे हैं। तुमको सारा अभी मालूम पड़ता है, वाममार्ग में जाते हैं तो कितना छी-2 बन जाते हैं। मंदिर में भी ऐसे-2 चित्र छी-छी बनाए हुए हैं। आगे घड़ियाँ भी ऐसे गंदे चित्रों वाले बनाते थे। अभी तुम समझते हो हम कितने गुल-2 थे फिर हम ही पुनर्जन्म लेते-2 कितने छी-छी बनते हैं। यह सतयुग के मालिक थे, तो दैवीगुणों वाले मनुष्य थे। अभी आसुरी गुणों वाले बनते हैं। और कोई फर्क नहीं है। पूँछ वाला व सूढ़ वाला मनुष्य होता नहीं है। देवताओं की सिर्फ यह निशानियाँ हैं। बाकी तो स्वर्ग प्रायःलोप हो गया है। यह चित्र ही निशानी है। चंद्रवंशियों की भी निशानी है। अभी तो माया पर जीत पाने युद्ध करते हो। युद्ध करते-करते फेल हो जाते हैं तो उनकी यह निशानी दे दी है। भारतवासी वास्तव में है ही देवी-देवता घराणे के, नहीं तो सभी घराणे के गिने जाए; परन्तु भारतवासियों को अपने घराणे का मालूम न होने

कारण हिन्दू कह देते हैं, नहीं तो वास्तव में तुम्हारा है ही एक घराणा। भारत में सभी हैं देवताएँ घराणे के, जो बेहद का बाप ही स्थापन करते हैं। शास्त्र भी भारत का एक ही है। वास्तव में सभी देवताएँ हैं। डीटी डिनायस्टी की स्थापना होती है फिर उनमें भिन्न-2 ब्रांचिज़ हो जाती हैं। बाप स्थापना करते हैं देवी-देवता धर्म की। मुख्य है चार धर्म। फाउंडेशन तो देवी-देवता धर्म का ही है। रहने वाले भी मुक्तिधाम के हैं। फिर तुम अपने देवी-देवता के ब्रांचिज़ में चले जावेंगे। भारत की बाउण्डरी एक ही है और कोई धर्म की नहीं है। यह है असल देवी-देवता धर्म की। फिर उनसे और-2 धर्म निकले हैं ड्रामा के प्लैन अनुसार। भारत का असल धर्म है ही डीटी, जो स्थापन करने वाला बाप ही है। फिर नए-2 पत्ते निकलते रहते हैं। यह सारा ईश्वरीय झाड़ है। बाप कहते हैं मैं इस झाड़ का बीजरूप हूँ। यह फाउंटेन है। फिर उनसे तीन ट्यूब्स निकलते हैं। मुख्य बात है सभी आत्माएँ भाई-2 हैं। सभी आत्माओं का एक बाप है, सभी उनको याद करते हैं। अभी बाप कहते हैं इन आँखों से तुम जो कुछ देखते हो उनको भूल जाना है। यह है बेहद का वैराग्य। उनका है हद का। सिर्फ घरबार से वैराग्य आ जाता है। तुमको तो इस सारी दुनिया से वैराग्य है। भक्ति के बाद है वैराग्य पुरानी दुनिया का। फिर हम नई दुनिया में जावेंगे वाया शान्तिधाम। बाकी कहते हैं यह पुरानी दुनिया भस्म हो जानी है। इस पुरानी दुनिया से अभी दिल नहीं लगानी है। रहने का तो यहाँ ही है जब तक लायक बन जावें। हिसाब-किताब सभी चुक्तू करना है। तुम आधा कल्प लिए सुख जमा करते हो। उनका नाम ही है शान्तिधाम। सुखधाम। पहले सुख होता है। पीछे दुख। बाप ने समझाया है जो भी नई आत्माएँ आती हैं ऊपर से, जैसे क्राइस्ट में आत्मा आई उनको पहले दुख नहीं देखना है। खेल ही है पहले सुख, पीछे दुख। नए-2 जो आते हैं वह हैं सतोप्रधान। जैसे तुम्हारा सुख का अंदाज जास्ती है वैसे सभी के सुखों का अंदाज जास्ती न है। यह सभी बुद्धि से काम लिया जाता है। बाप आत्माओं को बैठ समझाते हैं। बाप कहते हैं मैंने यह शरीर धारण किया है। बहुत जन्मों के अंत में अर्थात् तमोप्रधान में मैं प्रवेश करता हूँ। फिर उनको ही फर्स्ट नम्बर में जाना है। फर्स्ट सो लास्ट। लास्ट सो फास्ट। यह भी समझाना पड़ता है ना। फर्स्ट के पीछे फिर कौन? मम्मा। उनका पार्ट ..... चाहिए। उन्होंने बहुतों को शिक्षा दी। फिर तुम बच्चों में नम्बरवार हैं जो बहुतों को शिक्षा देते हैं, पढ़ाते हैं। फिर पढ़ने वाले भी ऐसे कोशिश करते हैं जो तुमसे भी ऊँच चले जाते हैं। बहुत सेन्टर्स पर ऐसे होते हैं, जो पढ़ाने वाले टीचर्स से ऊँच चले जाते हैं। गैलप कर अच्छे-2 बड़े–2 सेन्टर्स पर चले जाते हैं। एक-एक को देखा जाता है। सभी की चलन से मालूम तो पड़ता है ना। कोई-कोई को तो माया ऐसा नाक से पकड़ती है जो एकदम खलास कर देती है, विकार में गिर पड़ते हैं। आगे चलकर तुम बहुतों का सुनते रहेंगे। कोई तो फिर अपने पति के साथ ही ऐसे मिल जाते हैं जो आगे से भी जास्ती। वण्डर खावेंगे यह तो हमको ज्ञान देते थे फिर यह कैसे चले गए। हमको कहते थे पवित्र बनो और खुद फिर छी-छी बन गए। समझेंगे तो ज़रूर ना। बहुत छी-छी बन जाते हैं। कब समझने वाले भी नहीं। न बाप याद आवेगा, न ज्ञान याद आवेगा। बाबा ने कहा है बड़े-बड़े अच्छे-2 महारथियों को माया बहुत ज़ोर से फटकारेगी। आखरीन जीत पा ही लेगी। जैसे तुम माया को फटकार फटकार जीत पाते हो ना। माया भी ऐसे ही करेगी। कितने अच्छे-2 फर्स्ट क्लास थे। नाम भी बाप ने कितने रमणीक रखे थे; परन्तु अहो माया..... आश्चर्यवत सुनन्ति, कथन्ति, भागन्ति, गिरन्ति हो गए। माया कितनी जबरदस्त है। इसलिए बच्चों को बहुत ही खबरदार रहना चाहिए। कोई के संग में न आना चाहिए। युद्ध का मैदान है ना। माया के साथ तुम्हारी कितनी बड़ी युद्ध है।

अच्छा, मीठे-2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।